Name of the College - APSM College, Barauni, Begusarai.
Name - Dr. Bharti Kumari (GT)
Deptt - A.I.H&C
Lesson/plan for class - B.A, A.I.H&C (H), part-1 - paper-1
Date - 17-04-2021.
Name of the topic - (B) Pratiharas (Role of dynasties)

गुर्जर प्रतिहार — भारत पर अरबों के आक्रमण के बाद संपूर्ण प्रायद्वीप में तीन महत्वपूर्ण शक्तियों का आविर्भाव हुआ। अपने - अपने क्षेत्रों में इन सभी ने दीर्घकाल तक राज्य किया, किन्तु इन सभी का अधिकांश समय आपस में ही संघर्ष करने में बीता। वास्तव में आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आरंभ होने वाला यह त्रिपक्षीय संघर्ष लगभग 200 वर्षों तक चलता रहा। ये तीन शक्तियाँ थी। — गुजरात राजपुताना के गुर्जर प्रतिहार, दक्कन के राष्ट्रकूट और बंगाल के पाल। ये सभी हर्ष की मृत्यु से उत्पन्न उत्तरी भारत में हुई रिक्तता का लाभ उठाकर समृद्ध गंगा घाटी का स्वामित्व प्राप्त करना चाहते थे और कन्नौज इस संघर्ष के लक्ष्य का प्रतीक बन गया।

गुर्जर - प्रतिहार वंश की स्थापना हरिचंद्र नामक राजा ने की किन्तु वंश का वास्तविक प्रथम महत्वपूर्ण राजा नागभट्ट प्रथम था। जिसने अरबों से लोहा लिया था। और पश्चिमी भारत में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की थी। ग्वालियर प्रशस्ति में इसे म्लेच्छों का नाशक बताया गया है।

P.T.O.

गुर्जर प्रतीहारों के समान बंगाल में पाल वंश ने भी राजशक्ति को जन्म दिया, जिसने वहाँ दशकों से चली आ रही अराजकता को समाप्त किया। हर्ष के समकालीन राजा शशांक की मृत्यु के बाद लगभग एक शताब्दी तक बंगाल में उत्पन्न हिंसा की अभिलेखों में 'मत्स्यन्याय' की संज्ञा दी गई है, अर्थात राज्य में ऐसी व्यवस्था थी कि अधिक शक्तिशाली व्यक्ति कमजोर व्यक्ति का शोषण किए जा रहा था। इस शताब्दी में बंगाल के कम से कम तीन राजाओं की हत्या भी की गई। पाल वंश के प्रथम राजा गोपाल को इस 'मत्स्यन्याय' एवं अराजकता को समाप्त करने का श्रेय दिया जाता है। उपरोक्त तीनों शक्तियों में से पाल वंश सर्वाधिक काल तक चला — लगभग 13 वीं शताब्दी के आरंभ तक।

महाराष्ट्र - दक्कन में नवोदित राज्य राष्ट्रकूट भी आरंभ में अरबों का विरोध करके महत्ता प्राप्त कर चुके थे। दंतिदुर्ग के कारण राष्ट्रकूट इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभर कर आए। यह वही क्षेत्र था, जिस पर पहले सातवाहन फिर चालुक्यों का राज्य था, और इन दोनों पूर्वगामी राजशक्तियों के समान ही राष्ट्रकूट भी उत्तर एवं दक्षिणी भारत की राजनीति में संलग्न हो गए।

उपरोक्त तीनों शक्तियों के पारस्परिक संघर्ष में जिन राजाओं ने भाग लिया उनका और इस महत्वपूर्ण संघर्ष के महत्वपूर्ण चरणों का ब्यौरा देना प्रासंगिक होगा। इस विवेचन में दी गई कुछ का वर्गीकरण किया जा रहा है। जो निम्नवत है।

Scanned with CamScanner

त्रिपक्षीय संघर्ष में रत व्यक्तित्व :-

गुर्जर प्रतीहार	राष्ट्रकूट	पाल
वत्सराज (783-795ई.)	ध्रुव (783-795ई.)	धर्मपाल (783-795ई.)
नागभट्ट द्वितीय (795-833ई.)	गोविंद तृतीय (793-814ई.)	देवपाल (815-855ई.)
रामभद्र (833-836ई.)	अमोघवर्ष प्रथम (814-880ई.)	विग्रहपाल (855-860ई.)
मिहिरभोज (836-889ई.)		नारायणपाल (860-915ई.)
महेन्द्रपाल (890-910ई.)	कृष्ण द्वितीय (880-914)	

उपरोक्त विवेचन से, स्पष्ट है कि कन्नौज, जो कि भारत की राजधानी का प्रतीक बन गया था। तीन महान शक्तियों के पारस्परिक संघर्ष का केन्द्र था। यह संयोग नहीं है कि तीनों शक्तियाँ - गुर्जर-प्रतीहार, राष्ट्रकूट एवं पाल वंश लगभग एक साथ ही प्रकाश में आई और लगभग एकसाथ ही लुप्त हो गई। यद्यपि 10वीं शताब्दी के बाद पाल वंश और महेन्द्रपाल (910ई.) तथा कृष्ण द्वितीय (914ई.) के बाद प्रतीहार एवं राष्ट्रकूट वंश चलते रहे किंतु वास्तविकता यह है कि 10वीं शताब्दी के आरंभ के बाद इन सभी शक्तियों का ह्रास हो गया था यानि कि ह्रास होना आरंभ हो गया था। ध्रुव-गोविंद तृतीय, धर्मपाल - देवपाल एवं भोज - महेन्द्रपाल के जिन तीन युगों में क्रमशः राष्ट्रकूट, पाल एवं प्रतीहार वंशों की जो

P.T.O.

सेवाएँ की थी। उस प्रकार की प्रतिमाएँ इन वंशो में लुप्त हो गई थी। इनके पतन के बाद अनेक सामंती राज्यों का उदय हुआ। परमार, चंदेल, चौलुक्य, चोल, चाहमान, नेपाल, कामरूप, काश्मीर, उत्कल, गंगवाड़ी, आदि शक्तियों एवं प्रदेशों का स्वतंत्र अस्तित्व भारतीय प्रायद्वीप की राजनीति की विशिष्टता बन गया।

दसवीं शताब्दी के मध्य तक प्रतीहार वंश की शक्ति लगभग पूर्ण रूप से क्षीण हो चुकी थी। पश्चिमी भारत एवं मध्य देश की इस शक्तिशाली साम्राज्य के अवशेषों पर एक नहीं अपितु अनेक शक्तियों का उदय हुआ। जो प्रतिहारों की सामंत रह चुकी थी। परमार (चौहान) चंदेल चालुक्य, गाहड़वाल, ऐसी ही शक्तियाँ थी, जब महमूद गजनवी एवं मोहम्मद गोरी के आक्रमण हो रहे थे और भारत में तुर्की राज्य की स्थापना की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी, तब उत्तरी भारत में इन्हीं राजनीतिक। शक्तियों का बोलबाला था। यशोवर्मन का पुत्र धंग (950 - 1008ई.) बड़ा प्रतापी और विजयी सिद्ध हुआ। प्रतीहारों से पूर्ण स्वतंत्रता का वास्तविक श्रेय उसी को दिया जाता है।

भारती कुमारी
A.P.H.&C
17-04-2021